प्रार्थना-सभाओं
में
गांधी जी के भाषण

दिल्ली. १-१०-४७ से ७-१०-४७ तक

* *

अंक ३

पब्लिकेशन्स डिवीज़न
मिनिस्ट्री आफ़ इन्फार्मेशन ऐण्ड ब्राडकास्टिंग
गवर्नमेंट आफ़ इण्डिया

*

मूल्य—चार आने

भूमिका

महात्मा गान्धी की दिल्ली की प्रार्थना-सभाओं में दिये गये ७ भाषणों की पहली और ८ भाषणों की दूसरी किश्त हम जनता के सामने उपस्थित कर चुके हैं। ७ भाषणों की यह तीसरी किश्त है। इसी प्रकार महात्मा जी के भाषणों के और भी संग्रह क्रमशः निकालने का प्रबन्ध किया गया है।

महात्मा जी के सन्देश की जनता को कितनी आवश्यकता है यह कहने की बात नहीं। वातावरण को शान्त करने तथा जनता के हृदय में सद्भावना स्थापित करने में ये भाषण निश्चय ही सहायक सिद्ध होंगे।

★ ★

१ अक्तूबर, १९४७

एक बहिन ने मुझको कल खत लिखा है। उसमें वह लिखती है कि मैं कुछ सेवा करना चाहती हूँ और मेरे पतिदेव भी कुछ सेवा करना चाहते हैं। लेकिन हमको कोई बताता नहीं है कि क्या करें। यह प्रश्न बहुत लोग करते हैं लेकिन मैंने ऐसे प्रश्नों का एक ही जवाब दिया है कि हुकूमत का क्षेत्र, सरकार का क्षेत्र, वह तो छोटा रहता है लेकिन सेवा का क्षेत्र बहुत बड़ा रहता है। इतने दुखी और पीड़ित भूखे और नंगे हैं। लम्बा-चौड़ा सेवा का क्षेत्र पड़ा है। इसमें किसी को पूछने की गुंजाइश ही नहीं रहती है। जो सेवा करना चाहता है वह करे। लेकिन हम ऐसे पंगु बन गये हैं कि हमको किसी को पूछना पड़ता है। तो मैं बता दूँ क्या करें। आखिर में देहली स्वच्छता के लिए कितनी मशहूर है? उसमें इतने कैम्प पड़े हैं और उनमें कितनी स्वच्छता है, वह मैं जानता हूँ। लोग वहाँ बीमार हो जाते हैं। यहाँ जितने शिविर पड़े हैं उनमें इतनी गन्दगी भरी रहती है कि उसका बयान करना बड़ी मुसीबत का काम है। जहाँ खून-खराबा हो गया है वहाँ भी बस ऐसा ही पड़ा है। दिल्ली की म्यूनिसिपैलटी कभी भी सफ़ाई के लिये मशहूर नहीं रही। देहली शहर की म्यूनिसपैलटी ने शहर को साफ़-सुथरा कभी रखा हो और दुनिया में से लोग आकर देहली देखें और कहें कि अगर कोई स्वच्छ शहर देखना चाहे तो देहली देखे, ऐसी तो बात नहीं है। सफ़ाई हो तो लोगों के मकान साफ़ हों, लोगों के पाखाने साफ़ हों। लोगों के बैठने का, सोने का स्थान साफ़ हो। ऐसे ही लोगों के दिल भी साफ़ हों। तो अगर दूसरा काम न मिल सके तो मैं कहूँगा कि इतना काम तो है ही। यह हो सकता है कि वह कैम्पों में न जा सकें तो और भी जगहें हैं, कहीं भी हम पूरी सफ़ाई रखें तो उसका असर सारे दिल्ली के शहर पर पड़ता

है। ऐसा मान कर हर एक आदमी अपने मकान को, और अपने दिल को, आत्मा को साफ ही रखे। उसका नतीजा मुझे बताने की जरूरत नहीं। मैं तो उस बहिन को कहता हूँ कि अगर वह सचमुच सेवा करना चाहती हैं, सेवा भाव से, नाम के लिए नहीं, तो सेवा करने के लिए आपके लिए बहुत बड़ा क्षेत्र दिल्ली में पड़ा है। उसको मुझे कुछ भी बतलाने की आवश्यकता नहीं और अगर यह कर सकें, दिल्ली वासियों के दिल साफ हो जायँ यहाँ जितने आश्रित लोग आते हैं वह भी साफ हो सकें तो वह तो एक बहुत बुलन्द काम होगा और वे आदर्श दम्पत्ति बन जायंगे। दूसरे उनकी नकल करेंगे।

अभी मेरे पास दो तार आये हैं। एक लिखता है कि हमको तो ऐसा लगता था कि हिन्दुस्तान के लोग बहुत अच्छे हैं और वहाँ हिन्दू मुसलमान सब मिले-जुले ही रहते हैं। यह तार मुसलमान भाई का है। अब हिन्दुस्तान में क्या हो गया है कि हिन्दू मुसलमान एक दूसरे के साथ बैठ भी नहीं सकते, एक दूसरे के साथ झगड़ते हैं, एक दूसरे को काटते हैं और जंगली पशु से बन गये हैं। दिल्ली को लें। दिल्ली के हिन्दू, सिक्ख, मुसलमानों को अपनाना चाहते हैं, और उनको भाई बना कर रखना चाहते हैं बशर्ते कि वे अपनी वफादारी यूनियन के प्रति सच्चे दिल से जाहिर कर दें। जो यूनियन में रहना चाहते हैं, मैं हूँ, या आप हैं या कोई भी, ऐसा तो सबको करना ही चाहिये। यह मुसलमानों के लिए खास नहीं है, सब के लिए है और जरुरी है। फिर मुसलमानों के पास काफी हथियार पड़े हैं बहुत से मिल गये हैं लेकिन सब नहीं आये। पुलिस के जरिये तहकीकात चल रही है लेकिन पुलिस के जरिये से सब तो आ नहीं सकते हैं। तो वे अगर साफ दिल हैं और हिन्दुस्तान के साथ लड़ना नहीं चाहते तो वे हिन्दुस्तान के वफादार बनें। कोई मुसलमान ताकत हो और हिन्दुस्तान पर हमला करे तो उससे भी लड़ना चाहिये। यह ठीक है कि अगर उन्हें हिन्दुस्तान के साथ लड़ना नहीं है, तो उन्हें हथियारों की क्या जरुरत है। हमारे यहाँ क्रिस्टी बहुत थोड़े हैं। लेकिन अगर किसी क्रिस्टी मुल्क के साथ, जर्मन के साथ लड़ाई छिड़ गई तो उन्हें उसके साथ हमारी ओर से लड़ना होगा और यूनियन का वफादार रहना होगा। यह तो ठीक है कि अगर मुसलमान वफादार हैं, उनको हिन्दुस्तान से लड़ना नहीं है तो फिर हथियारों की जरूरत क्या है? उनको हथियार अपने आप दे देना चाहिये। यह तो सब ठीक है लेकिन जिस तरह वह बात कही गई उसमें जहर भरा था। आज तो शायद ४० हजार या इससे ज्यादा

मुसलमान कैम्पों में पड़े हैं उनको दिल्ली में से हमने निकाल दिया है। कुछ को कत्ल कर दिया है। कैसा ही बहादुर आदमी हो लेकिन मौत तो कोई पसन्द नहीं करता। कोई तिजारत करना चाहता है, कोई और कुछ करना चाहता है, वह सोचते हैं, चलो जिन्दा तो रहेंगे। यहाँ से भाग-भाग कर कहाँ जायें? सो उन्होंने पनाह ले ली है पुराने किले में, और हुमायूँ की कब्र के नजदीक जो बगीचा है उसमें। उन पर पानी आता है, सब कुछ होता है। पूरी डाक्टरी मदद नहीं मिल सकती है। यह डाक्टर नैयर मुझको वहां की हालत सुनाती हैं। चार घण्टे रोज उनको देती हैं। वहाँ काफी गर्भवती पड़ी हैं। उनके बच्चे पैदा कराने हैं। उसके लिए नर्सें चाहियें, कुछ दवा भी चाहिये। सब कुछ चाहिये। वह सब आहिस्ते-आहिस्ते होता है। वे ऐसी हालत में पड़े हैं तो क्यों पड़े हैं? हिन्दू कहते हैं कि हमने उन्हें निकाल दिया है। उसमें हमने कोई गुनाह नहीं किया। लोग कहते हैं कि उन्हें हम वापिस भी ला सकते हैं, कब, जब वे देश के लिए वफादार हो जायँ। मैं कहता हूँ कि उनको तभी वापिस लाया जा सकता है जब उनके दिल साफ हो जायँ। मान लो वे वफादार भी नहीं रहे। मान लो कि वे असला भी नहीं देते, क्या इसीलिए हम मुसलमानों को मारें काटें? चार करोड़ या साढ़े चार करोड़ मुसलमान पड़े हैं अगर उसमें एक करोड़ या एक लाख भी कहो, वह अपने घरों में छुपा कर असला रखते हैं तो आपकी मिलिटरी है, पुलिस है, वह सब उनको घर से बाहर ला नहीं सकती? आज पुलिस अंग्रेजों के जमाने की नहीं है। अगर हम मुसलमानों को मारें, उनके बच्चों को काटें, बहिनों को काटें, तो उसका नतीजा क्या होगा? यह आप देख लें। मैंने कहा है कि हम गिर गये हैं। जब १५ अगस्त को आजादी का दिन मनाया गया, हम आजाद बन गये, तब दो-चार दिन के लिए तो सब भाई-भाई होकर रहे, तो उस वक्त कोई असला के लिए कुछ नहीं कहता था। उस वक्त वफादारी की भी बात नहीं थी। सब बिलकुल ठीक था, आज सब भूल गये हैं कि वे भाई हैं। वे हमें, आपको मारते हैं, उसमें गुनहगार तो मुस्लिम लीग थी। दिल में गुस्सा भरा था। लेकिन आजादी का एक तेज आ गया और घड़ी भर हम भूल गये कि वे कभी दुश्मन थे। यह नज़ारा मैंने कलकत्ते में देखा। सारे हिन्दुस्तान भर में ऐसा हो गया। लेकिन बाद में वह गुस्सा निकल आया और उन्होंने कहा कि अब तो हिन्दुओं-सिखों को काटना चाहिये। काटो, निकाल दो। तो अब हम क्या करें। हम और आप मुसलमानों के साथ शर्त करें? हम करें भी तो वह काम हमारा रहा है। लेकिन हमारे नाम से, हमारे लिए, जो हमारे नुमाइन्दे हुकूमत चला रहे हैं उनको करना है। वे

नहीं करते तो ऐसा भी नहीं है। आप देख लें। वे कोशिश कर रहे हैं और थोड़ा बहुत असला ले भी लिया है। ऊँचे पहुँच कर हम एकदम नीचे गिर गये और रोजबरोज गिरते जा रहे हैं। मैंने कहा है कि दोनों शर्तें भले कायम रखो लेकिन इसके साथ एक और शर्त भी लगा दो तो पीछे आप आराम से काम कर सकते हैं। वह शर्त यह है कि हम कानून अपने हाथों में नहीं लेंगे। उन्हें सजा करना हमारा काम नहीं था। हम कबूल करते हैं कि हम बेवकूफ़ बने। मैं मानता हूँ कि मुस्लिम लीग ने पहिले बेवकूफ़ी की लेकिन एक आदमी घोड़े की सवारी करता है और दूसरा भी सवारी करता है तो पहिला आदमी घोड़े पर से किसी कारण से गिर जाता है, तो क्या जो दूसरा घुड़सवार है वह भी गिर जाय? पीछे दोनों का नाश हो जाता है। हमें इस तरह उनका मुकाबला क्या करना था? हम मुकाबला करेंगे किस चीज़ में? जैसा कि मैंने बतलाया है, जितना ज़्यादा भलापन उनमें है उससे ज़्यादा हम लायें। लेकिन जितनी दुष्टता उनमें है, उतनी ही दुष्टता हम करेंगे ऐसा मुकाबला करें तो हम दोनों गिरते हैं। वे बुराई करते हैं तो इस चीज़ को हमारी हुकूमत दुरुस्त करेगी। हमारी हुकूमत देख लेगी कि हमारा कोई भी आदमी पाकिस्तान में पड़ा है, हिन्दू हो, सिख या क्रिस्टी हो, वह वहाँ माइनारिटी में है और उसकी देखभाल अगर पूरी तरह नहीं होती है, उनको वहाँ काटते हैं, उनकी लड़कियों को उठा ले जाते हैं, उनकी जायदाद ले लेते हैं और उन्हें ज़बर्दस्ती से इस्लाम में लाते हैं तो उसका जवाब हमारी हुकूमत देगी। हम कौन जवाब देने वाले हैं? जवाब देने की कोशिश करके हम जाहिल बन जाते हैं। हम कभी जाहिल नहीं बनेंगे। यह आज़ादी की बड़ी भारी निशानी है। उस में हम बिल्कुल नापास साबित हुए हैं। उसका नतीजा क्या हुआ? मेरे दिल में आता है कि हम में से जो सचमुच कातिल बने हैं, वे कौन हैं यह तो मैं जानता नहीं हूँ, लेकिन हैं तो सही और वे तजवीज़ से काम कर रहे हैं, कि आज इतना खून करें, आज इतने घर जला दें, इतने मकान खाली करवा दें। वे करने वाले कहाँ हैं, यह मैं जानता नहीं। लेकिन ऐसा होता है तो हम तो गिरते ही हैं। इसलिए हमको कबूल कर लेना है कि यह हमारी बेवकूफ़ी है। उस बेवकूफ़ी को हम निकाल देंगे और पीछे जितने पड़े हैं इनको लायेंगे। सल्तनत को और हुकूमत को यह देखना है कि जितने लोगों को पाकिस्तान में ईज़ा हुई है, जितने तबाह कर दिये गये हैं उन सब को पाकिस्तान मिन्नत करके बुलावे और जिनकी जायदाद लाहौर में है, वह जायदाद उनको वापिस मिले। उनके मकान जो ले लिये गये हैं उनको वापसदेना है। कितने बुलन्द मकानात मैंने

देखे हैं। लड़कियों की कितनी तालीमगाह वहाँ है। तालीम का जो इन्तज़ाम लाहौर में रहा, वह हिन्दुस्तान में किसी जगह पर नहीं रहा। लाहौर तालीम के बारे में पहिले दर्जे पर था, वह लाहौर आज कहाँ है? लाहौर को, वहां की संस्थाओं को, बनाने में लाहौर की हुकूमत ने हिस्सा नहीं लिया है, पैसा नहीं दिया है। पंजाब के लोग तगड़े हैं, बड़ी तिजारत करने वाले हैं, पैसा पैदा कर लेते हैं। बड़े-बड़े बैंकर पड़े हैं। वे लोग जैसा पैसा पैदा करने में होशियार हैं वैसे पैसा ख़र्च करने में हैं। मैंने यह सब आँखों से देखा है। उन्होंने इतने मकानात बनाये। इतने कालेज औरतों और मर्दों के लिए रक्खे और पीछे ऐसे आलीशान अस्पताल बनाये, वे सब उनको वापस करना चाहिये। ४० मील लम्बा कारवाँ आ रहा है, बेहाल पड़ा है। हुकूमत के हाथ में अगर हम अपने दुःख का बदला लेना छोड़ देते तो हम जाहिल नहीं बनते। यह मैंने बतलाया। मेरे पास विदेश से मुसलमान भाई का तार आया है। लोग ऐसे क्यों बन गए हैं? भाई-भाई बनें। हम तो मुसलमान हैं मगर हम नहीं चाहते हैं कि आपस में लड़ें। इस्लाम ऐसा नहीं सिखाता। मैंने कहा ही है कि आप लोग जागें इतना मैं कह दूँ। आप मेरी न मानें तो न मानें। मगर मैं ऐसी चीज़ों का गवाह तो नहीं बनना चाहता हूँ। मैं यह गिरावट देखना नहीं चाहता हूँ। मेरी तो यही ईश्वर से प्रार्थना है कि मुझे इससे पहिले उठा लें। अगर हालत न सुधरी तो मेरे दिल में ऐसा अंगार पैदा हो जायगा, कि मुझे भस्म कर डालेगा। मेरा दिल कहता तू यह देखकर क्या करेगा। हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिए तूने अपनी जान कुरबान करने की कोशिश की, जान तो नहीं गई लेकिन आज़ादी तो मिल गई। लेकिन आज़ादी के साथ-साथ तू यह नतीजा देखने के लिए जिन्दा रहकर क्या करेगा? तो मेरी तो दिन रात ईश्वर से यह प्रार्थना रहती है कि मुझको तू यहाँ से जल्दी उठा ले। या मेरे हाथ में एक बालटी रख दे ताकि उस के मार्फत इस अंगार को बुझा दूँ।

यहाँ एक अस्पताल है। अस्पताल में बहुत से घायल मुसलमान पड़े हैं, सब मुसलमान नहीं हैं थोड़े हिन्दू भी पड़े हैं। उनको घायल और कत्ल करने की किसी ने कोशिश की। ऐसी कोई पार्टी पड़ी है, देहात से आई है। उन्होंने बिल्कुल एक छापा मारा, दरवाज़े से नहीं, लेकिन छोटी-छोटी खिड़कियाँ रहती हैं उसमें से भीतर घुसे। और चार या पाँच मरीजों को कत्ल करके भागे। इससे ज़्यादा कोई जहालत की वहशियाना बात मैं नहीं जानता। किसी लड़ाई में भी ऐसा नहीं होता। लड़ाइयों में काफी अस्पतालों में गोलियाँ चली हैं लेकिन इस तरह से तो कभी नहीं हुआ।

और एक बात सुनाता हूँ। ट्रेन आती है तो उसमें पाँच आदमी एक आदमी को खिड़की में से फेंक देते हैं जैसे सामान फेंक दिया। तो वह तो मर ही जायगा। यह आजकल की बात है और, अस्पताल का किस्सा वह कल की बात है या परसों की होगी। इसमें शर्मिन्दा होना किस को है? सिर झुकाना किस को है? आपको, मुझको। जितने हम पड़े हैं, हिन्दू उनको। पीछे ऐसा कहते हैं कि मुसलमान भी ऐसे हैं। मैं वह समझता हूँ। वहाँ पश्चिम पंजाब में जो होता है उसका जवाब हुकूमत मांगे।

★

२ अक्टूबर, १९४७

आज एक सिक्ख भाई मेरे पास आये थे। उन्होंने कहा कि मुझसे किसी ने पूछा कि आप ने गुरु अर्जुनदेव की वाणी तो सुनाई परन्तु १० वें गुरु गोविन्दसिंह जी ने उसमें तबदीली करदी, इस बारे में आप क्या कहोगे। इतिहास सिखाया जाता है, कि गुरु गोविन्दसिंह तो मुसलमानों के दुश्मन की हैसियत से पैदा हुए। लेकिन ऐसा मानने का कोई सबब नहीं, क्योंकि १० वें गुरु साहब ने करीब करीब वही कहा है जो गुरु अर्जुन देव ने कहा था। गुरु नानक की तो बात ही क्या ? वह तो कहते हैं कि मेरे नजदीक हिन्दू, मुसलमान सिक्ख में कोई अन्तर नहीं है। कोई पूजा करे, कोई नमाज़ पढ़े, सब एक है। एक ब्राह्मण पूजा करता है, तो दूसरे धर्म वाला भगवान् को कोसता है, ऐसा नहीं। मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं। पूजा और नमाज़ दोनों एक ही चीज़ हैं। मानुस सब एक हैं, वाणी दूसरी दूसरी है। गुरु गोविन्द सिंह ने कहा है कि मानुस सब एक है और एक ही के अनेक प्रभाव हैं तो पीछे मैं माने लेता हूँ कि हम सब एक हैं अनेक हैं। और देखने में तो अनेक भेष हैं लेकिन वैसे सब एक हैं। व्यक्ति तो करोड़ों हैं लेकिन स्वभाव से एक हैं। गुरु गोविन्द सिंह ने कहा है "एकै कान, एकै देह, एकै बैन है।" पीछे कहा, "देवता कहो, अदेव कहो, यक्ष कहो, गन्धर्व कहो, तुर्क कहो" वह सब न्यारे न्यारे हैं, वहीं गुरु गोविन्दसिंह जी कहते हैं—"देखत तो अनेक भेष हैं, उसका प्रभाव एक है" बैन के माने वाणी है वाणी तो एक है, जबान एक है। और आतिश वह एक है। क्या मुसलमान के यहां एक सूरज है और हम और आप लोगों के लिए कोई दूसरा सूरज है, वह तो सब के लिए एक ही है। वह कहते हैं आब, पानी भी एक है। गंगा बहती है तो गंगा नहीं कहती है कि खबरदार को

तुर्क हो तो मेरा जल नहीं पी सकता है, बादलों में से जल आता है तब बादल नहीं कहते हैं कि मैं आता हूँ पर मुसलमानों के लिए नहीं, पारसियों के लिए नहीं, मैं तो सिर्फ हिन्दुओं के लिए हूँ। यूनियन सरकार हिन्दुओं के ही लिए हो, ऐसा नहीं यह हो नहीं सकता। कुरान कहो, गीता कहो, पुराण कहो, सब एक ही हैं, लेकिन लिबास अलग अलग पहना दिया है। अरबी ज़बान में लिखो तो पीछे उसको कहो कुरान है, नागरी लिपि में लिखो, संस्कृत में लिखो, मगर समझकर पढ़ो तो चीज़ एक ही है। तो वह कहते हैं कि सब एक हैं और ऐसा कहकर खत्म करते हैं। गुरु गोविन्दसिंह ने यह सिखाया है। मैंने पूछा कि पंडित जी अगर गुरु गोविन्द सिंह जी ने आप कहते हैं वैसे किया भी हो तो वह गलत बात थी। जब लड़ाई होती थी तो हिन्दू-मुसलमान लड़ाई में मरते थे, घायल भी होते थे और ज़खमी भी लेकिन जो ज़िन्दा होते थे उनको गुरू साहिब का एक समझदार शिष्य पानी देने का काम करता था। उसने मुसलमानों को भी पानी पिलाया, हिन्दुओं को भी और सिक्खों को भी। उसने कहा मुझको गुरु महाराज ने ऐसा ही सिखाया है कि तेरे नजदीक न कोई मुसलमान है, न कोई सिक्ख है, न कोई हिन्दू है, सब के सब इन्सान हैं और जिसको पानी की हाजत हो तो उसको पानी देना है। वह ऐसा थोड़े ही कहते थे कि अगर कोई हिन्दू ज़खमी हो गया है तो मरहम-पट्टी लगा दें लेकिन अगर कोई मुसलमान ज़खमी पड़ा है तो उसको वैसे ही छोड़ दो। उन्होंने पूछा लेकिन गुरु जी तो मुसलमानों के साथ लड़े थे, तो लड़े तो सही लेकिन उन मुसलमानों के साथ लड़े जिन्होंने इन्सानियत और इन्साफ़ के रास्ते को छोड़ दिया था। जिन्होंने अपने मज़हब को छोड़ दिया था। वह दानी पुरुष थे, निर्लिप्त थे, अवतारी पुरुष थे, उनके लिए मेरे तेरे का सवाल नहीं था, लेकिन हां, वह अपनी रक्षा तो करते थे, लड़ाई करते थे, इसमें कोई शक नहीं। सिक्ख दावा करे कि नहीं हम तो अहिंसक हैं तो वह तो गलत बात होगी। वह कृपाण रखते हैं। लेकिन गुरु जी ने सिखाया कि कृपाण रक्षा के लिए है, वह कृपाण तो मासूम की रक्षा के लिए है। जो दूसरों को तंग करता है उस जालिम के साथ लड़ने के लिए वह कृपाण है। कृपाण बूढी औरतों को काटने के लिए नहीं है, बच्चों को काटने के लिए नहीं है, औरतों को काटने के लिए नहीं है। जो निर्दोष बेगुनाह आदमी हैं उनको काटने के लिए नहीं है। कृपाण का तो वह काम नहीं है। जो गुनहगार है और जिस पर इल्जाम साबित हो गया है कि यह गुनहगार है, पीछे वह मुसलमान हो,

कोई भी हो सिक्ख भी क्यों न हो उसके पेट में वह कृपाण चली जायगी। आप लोग कृपाण जिस तरीके से आज खोलते हैं वह तो जहालत की बात है। ऐसे लोगों के पास से कृपाण छीनी जाय तो कोई गुनाह नहीं माना जायगा क्योंकि इन्होंने धर्म तो छोड़ दिया है। सिक्ख ने कृपाण का दुरुपयोग किया है।

आज तो मेरी जन्मतिथि है। मैं तो कोई अपनी जन्मतिथि इस तरह से मनाता नहीं हूँ। मैं तो कहता हूँ कि फाका करो, चर्खा चलाओ, ईश्वर का भजन करो, यही जन्मतिथि मनाने का मेरे ख्याल में सच्चा तरीका है। मेरे लिए तो आज यह मातम मनाने का दिन है। मैं आजतक जिन्दा पड़ा हूँ। इस पर मुझको खुद आश्चर्य होता है, शर्म लगती है, मैं वही शख्श हूँ कि जिसकी जबान से एक चीज़ निकलती थी कि ऐसा करो, तो करोड़ों उस को मानते थे। पर आज तो मेरी कोई सुनता ही नहीं है। मैं कहूँ कि तुम ऐसा करो। "नहीं, ऐसा नहीं करेंगे" ऐसा कहते हैं। "हम तो बस हिन्दुस्तान में हिन्दू ही रहने देंगे और बाकी किसी को पीछे रहने की जरूरत नहीं है।" आज तो ठीक है कि मुसलमानों को मार डालेंगे, कल पीछे क्या करोगे। पारसी का क्या होगा और क्रिस्टी का क्या होगा और पीछे कहो अंग्रेजों का क्या होगा, क्योंकि वह भी तो क्रिस्टी हैं। आखिर वह भी क्राइस्ट को मानते हैं, वह हिन्दू थोड़े हैं, आज तो हमारे पास ऐसे मुसलमान पड़े हैं जो हमारे ही हैं, आज उनको भी मारने के लिए 'हम तैयार हो जाते हैं तो मैं यह कहूँगा कि मैं तो ऐसे बना नहीं हूँ। जब से हिन्दुस्तान आया हूँ मैंने तो वही पेशा किया कि जिससे हिन्दू-मुसलमान सब एक बन जायं। धर्म से एक नहीं लेकिन सब मिलकर भाई-भाई होकर रहने लगें। लेकिन आज तो हम एक दूसरे को दुश्मन की नज़र से देखते हैं। कोई मुसलमान कैसा भी शरीफ हो तो हम ऐसा समझते हैं कि कोई मुसलमान शरीफ हो ही नहीं सकता। वह तो हमेशा नालायक ही रहता है। ऐसी हालत में हिन्दुस्तान में मेरे लिए जगह कहाँ है और मैं उस में जिन्दा रह कर क्या करूंगा? आज मेरे से १२५ वर्ष की बात छूट गयी है। १०० वर्ष की भी छूट गयी है और ९० वर्ष की भी। आज मैं ७९ वर्ष में तो पहुँच जाता हूँ लेकिन वह भी मुझको चुभता है। मैं तो आप लोगों को, जो मुझको समझते हैं और मुझको समझने वाले काफी पड़े हैं, कहूँगा कि हम यह हैवानियत छोड़ दें। मुझे इसकी परवाह नहीं कि पाकिस्तान में मुसलमान क्या करते हैं, मुसलमान वहाँ हिन्दुओं को मार डालें, उससे वे बड़े होते हैं, ऐसा नहीं, वह तो जाहिल हो जाते हैं। हैवान हो जाते हैं तो क्या मैं उसका मुकाबला करूँ? हैवान

बन जाऊँ, पशु बन जाऊँ, जड़ बन जाऊँ ? मैं तो ऐसा करने से साफ इन्कार करूँगा और मैं आप से भी कहूँगा कि आप भी साफ इन्कार करें। अगर आप सचमुच मेरी जन्मतिथि को मनाने वाले हैं तो आपका तो धर्म यह हो जाता है कि अब से हम किसी को दीवाना बनने नहीं देंगे, हमारे दिल में अगर कोई गुस्सा हो तो हम उसको निकाल देंगे। मैं तो लोगों से कहूँगा भाई आप कानून को अपने हाथ में न लें, हुकूमत को इस का फैसला करने दें। इतनी चीज़ आप याद रख सकें तो मैं समझूँगा कि आपने काम ठीक किया है। बस इतना ही मैं आप से कहना चाहता हूँ।

★

३ अक्टूबर, १९४७

मैं देख रहा हूँ कि हमारे मुल्क में काफी जगह पर आज सत्याग्रह चलता है। मुझको बड़ा शक है कि जिस जगह पर वह कहते हैं कि सत्याग्रह चलता है वहाँ सचमुच वह सत्याग्रह है या दुराग्रह है। ऐसा हमारे मुल्क में हो गया है कि एक चीज़ का नाम ले लिया लेकिन काम उससे उल्टा किया। और आज जब कोई भी आदमी, चाहे वह पोस्ट आफ़िस का हो, टेलीग्राफ आफिस का हो, रेल्वे का हो, या तो देशी राज्य में हो, जिस जगह पर वह सत्याग्रह करने की कोशिश कर रहा है इन सब को इतना समझ लेना चाहिये कि यह काम जो वे कर रहे हैं सत्य है या असत्य। अगर असत्य है तो उसका आग्रह क्या करना था और अगर सत्य है तो सत्य का आग्रह हमेशा और हर हालत में करना ही चाहिये। "हमको कुछ मिल जाय" इस उद्देश्य से जो सत्याग्रह करते हैं वह सत्याग्रह नहीं हो सकता। वह तो असत्य का आग्रह होगा। सत्याग्रह के लिए मैंने बहुत सी चीज़ें बतला दी हैं। दो चीज़ें तो अनिवार्य बतलाई हैं। एक तो यह कि जिस चीज़ के लिये लड़ते हैं वह सचमुच सत्य है और दूसरे यह कि उसका आग्रह रखने में अहिंसा का ही उपयोग हो सकता है।

जितने लोग आज सत्याग्रह चला रहे हैं वे समझ बूझ कर काम करें। अगर मूल चीज़ असत्य है और उसके आग्रह में जबर्दस्ती की जाती है, तो उसको छोड़ना अच्छा होगा। अगर उसमें जहर भरा है, अगर वह दुराग्रह है और असत्य है, जो वह माँगते हैं, वह हक उनको मिल नहीं सकता, तो भी वह मांगना शुरू करते हैं, तो मैं कहूँगा कि ऐसी चीज़ मांगने में अहिंसा इस्तेमाल हो नहीं सकती। वह अहिंसा नहीं हुई; वह तो हिंसा हुई। जो आदमी एक असत्य चीज़ मांगता है और पीछे कहता है कि अहिंसा से कर लेगा वह कर नहीं सकता है।

अगर कैम्पों को चलाने का काम मेरे हाथ में हो तो कैम्पों में रहने वालों को मैं कहूँगा कि कैम्पों की सफाई का काम तो आपको ही करना है। क्या कैम्पों में जो लोग पड़े हैं, वे ताश खेलेंगे, चौपड़ खेलेंगे, जुआ खेलेंगे और पड़े रहेंगे, या तो सोते रहेंगे? खाना तो पूरा नहीं मिलता है। पानी नहीं मिलता है यह मैं जानता हूँ। 'तो पीछे मैं क्यों काम करूं?' ऐसा करते हैं तो हम ऐबी बन जाते हैं। वहाँ कोई ५ या ७ आदमी थोड़े ही हैं, हज़ारों की तादाद में पड़े हैं। कब पहुँचेंगे अपने घर में, यह भी पता नहीं। खाना तो हम उनको देंगे, लेकिन उस खाने के लिए वे कुछ काम तो करें। कम से कम सफाई करने से शुरू करें, पीछे कह दें कि हम दूसरा भी काम कर सकते हैं, सूत कात सकते हैं, बुन सकते हैं, बढ़ई का काम कर सकते हैं, लुहार का काम कर सकते हैं, दर्जी का काम कर सकते हैं। या तो हम खटीक का काम करें वह निकम्मी चीज़ नहीं है। इतने काम हिन्दुस्तान में पड़े हैं। कल वह भले ही करोड़पति थे, आज तो करोड़ चले गये, ऐसा दुनिया में हो जाता है। अब सबको नये सिरे से काम में जुट जाना ठीक है। कोई कहें कि हम करोड़पति थे हम क्यों यह काम करें, तो हमारा काम बिगड़ जाता है। हम जो काम करना चाहते हैं वह बन नहीं सकता मैं बड़े अदब से कहूँगा इस तरह हमारा काम चल नहीं सकता। हर दृष्टि से जितना काम हमारा चलता है वह तो आदर्श होना चाहिये। उसमें सफाई हो गन्दगी बिल्कुल नहीं। लोग पड़े हैं, इन्होंने अपना सब काम खुद किया है। ऐसा करें तो मैं आपको कहता हूँ कि हमें आज जो तकलीफ हो रही है वह काफी हदतक रफा होने वाली है। और अगर हम इस तरह काम करने वाले बन जाते हैं तो पीछे हमारा गुस्सा भी शान्त हो जायगा। हमारे दिलों में जो बैठ भाव पड़ा है, वह भी शान्त हो जायगा। भलाई तो इसी में है कि बुरे काम को बुरा समझना और पीछे उसका बदला देना है वह भलाई से देना। उसका नाम भलाई है। ऐसा नहीं कि कोई पागल बन जाय, तो हम भी मूरख बन जायँ। भलाई की निशानी यह है कि हम दुष्टता का बदला दुष्टता से न दें, दुष्टता का बदला हम साधुता से दें। हमारे मुल्क का तो इसी में कल्याण है। हम किसी को रंज नहीं पहुँचायेंगे लेकिन खुद दुख को बर्दास्त करके दूसरों को सुखी करने की कोशिश करेंगे। अगर यह किया तो पीछे हिन्दुस्तान का तो भला होता ही है आप जगत् का भी भला कर सकते हैं। आज तो हिन्दुस्तान की ओर लोग देख रहे हैं, कि हिन्दुस्तान क्या करता है। अभी तो हमारे सच्चे इम्तहान का वक्त आ गया है। आज़ादी मिली है अब हम क्या करेंगे।

★

४ अक्टूबर, १९४७

मैं आप लोगों को कैसे मनवा सकूंगा कि अगर हम लोग पागल नहीं बनते तो यह सब जो आज हो रहा है, होने वाला नहीं था। इसमें मुझको कोई सन्देह नहीं, मान लो कि मुसलमान पागल बने, इसलिए ये शरणार्थी लोग पाकिस्तान से भागकर आते हैं। इन्हें वहाँ चैन मिले तो हिन्दू वहाँ से क्यों भागेंगे? पश्चिमी पंजाब से क्यों भागेंगे? दूसरा पाकिस्तान का हिस्सा है, वहाँ से भी लोग भाग-भाग कर आते हैं, यह दुःख की कथा है। लेकिन वहाँ से क्यों हटते हैं वे यह समझने लायक चीज़ है। वहाँ के लोग जालिम बने हैं, ऐसा हम मान लें लेकिन उसके सामने क्या हम भी ज़ालिम बन जायँ। क्या हम हुकूमत अपने हाथों में ले लें; कानून अपने हाथों में ले लें कि चलो, वह मारते हैं तो हम भी मारेंगे, वे बूढ़ों को मारते हैं, तो हम भी मारेंगे, औरतों को मारते हैं तो हम भी मारेंगे, बच्चों को मारते हैं तो हम भी मारेंगे, जवानों को मारते हैं तो हम भी मारेंगे? मैंने बहुत दफा कहा कि यह वहशियाना कानून है। यह कानून चले और साथ-साथ मेरा जीवन चले, तो ये दो काम नहीं चल सकेंगे। तो आज तक मेरी प्रार्थना ईश्वर से यही रहती थी कि मुझको १२५ वर्ष जिन्दा रख जिससे मैं कुछ न कुछ और भी देश की सेवा कर सकूँ। और हिन्दुस्तान में खुदाई राज, राम-राज्य, जिसका नाम ईश्वरीय राज्य है, वह स्थापित हो तब मुझको चैन आ सकता है। तब मैं कह सकता हूँ कि हिन्दुस्तान सचमुच आज़ाद बन गया है। लेकिन आज तो वह ख्वाब सा हो गया है। रामराज्य तो छोड़ दो, आज तो किसी का राज्य नहीं। ऐसी हालत में मेरा जैसा आदमी क्या करे? अगर यह सब नहीं सुधर सकता, तो मेरा हृदय पुकार करता है हे ईश्वर! तू मुझको आज क्यों नहीं उठा लेता? मैं

इस चीज़ को क्यों देखता हूँ ? अगर तू नहीं उठाता और चाहता है कि मुझको जिन्दा रहना है तो कम से कम वह ताकत तो मुझको दे दे जो मैं एक वक्त रखता था। मुझे ऐसा गुमान था कि मैं लोगों को समझा सकूँगा। लोगों के पास आया और कहा खबरदार इस तरह से न करना तो वे समझ जाते थे, उनके दिल में मेरे प्रति इतनी मुहब्बत थी। मैं नहीं कहूँगा कि आज मेरे लिये लोगों के दिल में मुहब्बत कम हो गयी है। मगर कम हो या वैसी, उसके पीछे तो अमल होना चाहिए। वह नहीं है। तो मैं कहता हूँ कि मेरा असर चला गया है। जब हम गुलामी में थे तब तो मेरा काम अच्छा चलता था, लेकिन अब जब हम आजाद हो गए हैं, तब मेरा काम नहीं चलता। जो पाठ मैंने प्रजा को उस वक्त सिखाया था मैं तो वही पाठ आज भी दे सकता हूँ। अगर वह पाठ आज आप ले लें तो हम खूब आगे बढ़ जाते हैं।

मैं कहना तो यह चाहता था कि आप लोगों के लिए अब जाड़े के दिन आते हैं। मेरे लिये तो आप देखते हैं यह गरम चादर ये लड़कियाँ लेकर आई हैं, कि शायद मुझको ठंड लगे। खाँसी भी है, इस वक्त कम है, सो यह सूती चादर काफी है। लेकिन वे जो यहाँ कैम्पों में पड़े हैं, पुराने किले में पड़े हैं उनका क्या ? आप कह सकते हैं कि मुसलमानों को हम क्यों दें ? मैं तो ऐसा नहीं बना हूँ। मेरे लिए तो मुसलमान भी वही हैं, सिक्ख भी वही हैं, पारसी भी वही हैं, ईसाई भी वही हैं। मैं ऐसा भेद नहीं कर सकूँगा। इन जाड़े के दिनों में उन सब का क्या होगा ? अगर हम यह कहें कि यह तो हुकूमत का काम है, हुकूमत उन्हें जाड़े के दिनों में कम्बल दे देगी, तो मैं आपको कहता हूँ कि हुकूमत नहीं दे सकेगी। हुकूमत कोशिश तो करेगी लेकिन आज हमारे पास वह स्टाक कहाँ है ? हुकूमत कम्बल कहाँ से निकालेगी ? छू मंतर करके उनके पास आ जाता हो, ऐसे नहीं बनते। आज सारे योरुप में, अमरीका में भी वह चीज़ नहीं मिलती। हमको वहाँ से कोई वस्तु भेज नहीं सकते। कुछ रहम करके कोई भेजे भी तो दस बीस हज़ार कम्बलों से क्या होगा ? यहाँ तो लाखों लोग पड़े हैं, ऐसे हर एक को थोड़े ही मिल सकते हैं। मैं जितने आप लोग हैं सब से कहूँगा कि जाड़े के दिनों में वे सर्दी को बर्दाश्त करते रहें यह ठीक नहीं इसके साथ आप अपने सब कम्बल भी नहीं दे सकते। लेकिन मैं जानता हूँ कि हमारे पास बहुत से लोग ऐसे पड़े हैं जो अपने लिए कम्बल रखते हैं और जितने चाहिएँ उससे ज्यादा रखते हैं। दिल्ली में काफी गरीब पड़े हैं जिन्हें मुसीबत से कम्बल मिलते हैं। जितने कम्बल आप बचा सकते हैं उन्हें दे दें।

मैंने देखा है, मैं दिल्ली में रहा हूँ और जाड़े के दिनों में रहा हूँ। मैं समझता हूँ कि दिल्ली में काफी गरीब लोग भी पड़े हैं, लेकिन मैं तो इतना ही कहूँगा कि जो ऐसे गरीब नहीं हैं, जिनके पास एक कम्बल से काम चल सकता हो, और उनके पास दो हों, तो एक मुझे दे दें। इसी तरह से आप आज से चीजें देना शुरू करें। आप ऐसा न सोचें कि यहाँ हुकूमत करती है सो आपको कुछ करना नहीं। ठंड तो शुरू हो गई है लेकिन अभी बर्दाश्त हो सकती है। लेकिन १७ अक्टूबर के बाद मैं वाइसराय के घर गया था। तब वहाँ आग जलती थी, क्योंकि ठण्ड हो गयी थी और यहाँ की ठंड ऐसी होती है कि आदमी की बर्दाश्त के बाहर हो जाती है। अक्तूबर से वह जल्दी-जल्दी बढ़ने लगती है और तेज हो जाती है, नवम्बर, दिसम्बर, जनवरी, फरवरी यह सब जाड़े के खुशनुमा दिन हैं। जिनके पास खाना है, कपड़ा है, काफी पहन कर चलते हैं, बड़े बूट पहने हैं, मोज़े पहने हैं, वह तो जाड़े को खुशनुमा कह सकते हैं लेकिन जिनके पास नहीं हैं उनका क्या हाल होता है, उसका मैं गवाह हूँ आप भी हो सकते हैं। इसलिए मैं कहूँगा कि इतना तो हम करें कि जितने को हम बचा सकते हैं, बचा लें। जिनके पास जाड़े में पहनने लायक कपड़े हैं, यह भी हो सकता है कि आपके पास ऊनी कपड़ा न हो, ऊनी कमलिया नहीं तो लिहाफ तो रहता है। लिहाफ काफी हो जाता है, अगर वह अच्छा हो तो आप लिहाफ भी ला सकते हैं। चद्दर भी रहती है, जो चद्दर पुराने जमाने की मोटे कपड़े की, मोटे खद्दर की रहती है वह काफी गरम रहती है, मुझे और कपड़े नहीं चाहिएँ। लेकिन यह चद्दर की शक्ल में ऊन की हों, लिहाफ हों, या तो मोटी चद्दर पड़ी हों, उन तीनों चीजों में से जो आपके पास आराम से बच सके, आप अपने आप मुझे दे दें। अगर आप भेजना शुरू कर दें, तो इन्तजाम हो जायगा कि कौन उसका कब्जा लेंगे। मैं आप तो करने वाला नहीं हूँ ऐसा भी नहीं होगा कि चीज आ गई तो सब गोदाम में पड़ी सड़ जायगी या नालायक आदमी को मिल जायगी। जितनी चादरें आप देंगे, जितने ऐसे कपड़े आप देंगे, मैं आपको इतना कह सकता हूँ कि वे सब योग्य पुरुष और योग्य स्त्री के पास जाने वाली हैं। मैं उम्मीद तो करूँगा कि आप मुझको ऐसा न कहें कि यह तो हम हिन्दुओं के लिए देते हैं, यह सिक्ख के लिए देते हैं। इन्सान सब एक हैं। पीछे कोई न कहे कि इसमें से मुसलमानों को न देना। यहाँ काफी मुसलमान तो मारे गये, काफी भाग गये, हमने भगा दिये। जो बाकी रहे हैं, उनके पास कितनी जायदाद पड़ी है यह मुझको पता नहीं। जो मुसलमान हिन्दुस्तान में पड़े हैं वे भी अगर कम्बल

वगैरा भेजें और कहें कि हम तो मुसलमानों को ही देंगे, तो मैं मुसलमानों को दे दूँगा। लेकिन मैं यह उम्मीद करूँगा कि जितने लोग मेरी बात सुनते हैं और दूसरे जो इस रेडियो की मार्फत सुनने वाले हैं वे सब मुझे परेशान न करें, और कहदें कि हमने तुझको यह चीज कृष्णार्पण की। तो जो उसके लायक है उसको मिल जायगा। इसलिए मेरी उम्मीद है, विश्वास है कि इतना आप करेंगे। तो मैं यह कहूँगा कि आपने बहुत बड़ा काम किया है। ऐसा न करें कि चलो जो टूटा फूटा निकम्मा हो, मैला पड़ा हो, वह लाकर मुझको दे दें कि मैं धोऊँ, रफ़ू करूँ। मैला कपड़ा है तो आप धोने की कोशिश करें इतनी अपने को तकलीफ दें, धोबी को देने की कोई जरूरत नहीं रहती है। आराम से थोड़ा पानी तो मिल जायगा तो उसको अच्छा साफ़ करके लपेट करके आप मुझे दे दें, तो मुझको बड़ा अच्छा लगेगा।

★

५ अक्टूबर, १९४७

पहले तो मैं अपनी तबियत के बारे में आपसे कुछ कहूँ क्योंकि आज भी अख़बारों में मेरी बीमारी की बाबत कुछ ख़बर आई है। किसने दी है, मुझको पता नहीं है। जो डाक्टर मेरे इर्द-गिर्द रहते हैं, उनकी तो यह ख़बर दी हुई नहीं हो सकती। लेकिन बहुत आदमी यहाँ आते जाते हैं। वे देखते हैं कि मुझे कुछ खाँसी वगैरह है, थोड़ा बुखार भी आ जाता है और फिर वे रज का गज बना देते हैं। ऐसा क्यों? कुछ मेरी तन्दुरुस्ती के बारे में लिखें, तो क्योंकि मैं महात्मा माना जाता हूँ इसलिये वह चीज़ सारी दुनिया में फैल जाती है। गाँधी मर जायगा तो क्या होगा? सब मरने वाले हैं तो गांधी को भी मरना है। कोई अमरत्व फल खाकर तो आया नहीं है। मुझे कुछ दुर्बलता और खाँसी तो है, पर इसे अख़बारों में देने से क्या लाभ? मैं यह कहूँगा कि जिन्होंने यह ख़बर दी उन्होंने न तो मेरा और न किसी अन्य का ही भला किया। आप तो देखते हैं, मैं आता हूँ, बात भी करता हूँ। इसमें कोई रुकावट नहीं होती है। हाँ थोड़ी दुर्बलता है, खाँसी है, लेकिन उसको ज़ाहिर क्या करना था? मेरी इच्छा है कि लोग ऐसा न करें।

दूसरे मैंने तो कल आप लोगों से कहा था, प्रार्थना की थी कि अगर दे सकते हों, तो ग़रीबों के लिये, अभी जाड़े के दिन आते हैं, तो कम्बल दें, रज़ाई दें, और दूसरी ओढ़ने लायक़ चीज़ें हो, उनको भी दें। आज तीन सज्जनों ने कम्बल भेजे हैं। उनमें से दो सज्जन हैं, वे तो यहीं इर्द गिर्द में रहते हैं, नाम तो मैं उनका भूल गया हूँ, उन्होंने दो कम्बल मुझे भेजे हैं, अच्छे हैं, ख़ासे हैं। एक शख़्स हैं, उनका भी नाम तो मैं भूल गया हूँ, उन्होंने दस कम्बल दिये हैं और वे तो नये ही हो सकते हैं। वह सब जैसा मैंने आपको कहा है, सुरक्षित रखे जा रहे हैं और जैसा

आपको कल कहा था उनका इस्तेमाल योग्य भाई और बहिनों को देने में होने वाला है। मेरी उम्मीद है कि आज अगर आप सब लोग समझ गये हैं तो जो कोई चीज़ आप दे सकते हैं, मुझको दीजिये।

अभी एक तार मेरे पास आगया है, जिसे कई आदमियों ने मिलकर साथ भेजा है। तार मेरे सामने पड़ा है। उसमें जो लिखा है, वह मुझे अच्छा नहीं लगता। लिखने का तो उनको अधिकार है। तार भेजने वाले लिखते हैं कि जैसा हिन्दुओं ने किया है यदि वे वैसा न करते, तो शायद तुम भी ज़िन्दा नहीं रह सकते थे। यह बहुत बड़ी बात हो गयी। मुझको ज़िन्दा रखने वाली कोई ताक़त मैं मानता ही नहीं हूँ, सिवा एक ईश्वर के। वह जब तक चाहता है तब तक मैं ज़िन्दा हूँ, और उस वक्त तक मेरा कोई नाश नहीं कर सकता है। जो मेरे लिये सही है, वह सब के लिये सही है। तो ऐसी बात वे क्यों लिखें? मुझको कहना पड़ेगा कि लिखा तो मुहब्बत से है यह, पर मेरा यह विश्वास है कि मुझे या किसी को भी ज़िन्दा रखना सिर्फ़ भगवान के हाथों में है।

वे पीछे लिखते हैं कि याद रक्खो, (कुछ नाम भी दिये हैं उसको मैं छोड़ना चाहता हूँ) तुम बहुत भोले हो, जो अब तक मुसलमानों का विश्वास करते हो। कोई एक नहीं जो मुझको ऐसा बतलाते हैं। सब मिलकर मुझको सुनाते हैं कि यहाँ मुसलमान ऐन मौक़े पर दग़ा देने वाले हैं; वे पाकिस्तान का साथ देने वाले हैं और वे पाकिस्तान के लिये हिन्दुस्तान के सामने लड़ने वाले हैं। वे लिखते हैं कि १०० में से ९८ मुसलमान दग़ाबाज़ हैं। मुझको कहना पड़ेगा मैं यह नहीं मानता। यहाँ के साढ़े चार करोड़ मुसलमान तो ज़्यादातर देहातों में पड़े हैं, और जो थोड़े मुसलमान शहरों में पड़े हैं, वे हम में से ही मुसलमान बने हैं, वे सब के सब दगाबाज़ नहीं हो सकते। तो क्या सब मुसलमान दग़ाबाज़ हैं, यह मानकर प्रत्येक मुसलमान के घर में प्रवेश करो और उन्हें तबाह कर दो? हर एक के पास हथियार हैं, उनको छीन लो? उनके कहने का बिलकुल ऐसा ही मतलब हो जाता है कि उनको तबाह करो और सबके सबको यहाँ से हटा दो। मैं उन भाइयों को कहूँगा कि यह तो कायरों की बातें हैं। मैं तो एक ही चीज़ कहूँगा कि मान लो यदि मुसलमान ऐसे हैं तो वह चीज़ हुकूमत को साबित कर दो। हुकूमत को कहो कि इसका फ़ैसला करे। ऐसा ही करे जैसा कि वे भाई कहते हैं तो उससे तो हम दोनों दुश्मन बनेंगे और फिर उसका नतीजा होगा दोनों की लड़ाई। दोनों लड़ते हैं, तो पीछे दोनों का नाश होने वाला है या यह कहो कि हम पाई

हुई आज़ादी को नाश करेंगे। कोई हिन्दू दूसरों के मातहत जाकर अपना हिन्दूपन नहीं रख सकता है। अंग्रेज़ थे तो हम उनकी गुलामी में सोचते थे कि हमारे धर्म की रक्षा होती है वह भूल थी।

जब मैं बच्चा था तो मैंने एक अन्धे कवि की, जो एक अच्छे कवि थे, कविता पढ़ी थी जिसके अर्थ यह होते हैं अब तो खैर और बैर गया, हमें आराम से रहना है अंग्रेज़ आ गये हैं। एक ज़माना था कि हम अंग्रेज़ों पर मुग्ध हो गये थे और सोचते थे कि इनके नीचे हम सुरक्षित हैं। वह भूल सुधारो। अब यदि हम ऐसे बुज़दिल बनें कि साढ़े चार करोड़ मुसलमानों को मार भगाने की सोचें, तो उससे तो हम कायर सिद्ध होंगे। ऐसी बातों से हम अपने धर्म को कभी भी बचा नहीं सकेंगे। मैं तो ऐसा नहीं मानता कि हिन्दू, मुसलमान जन्म से एक दूसरे के दुश्मन पैदा हुए हैं। और अगर ऐसे बने तो पीछे हिन्दुस्तान कैसे ज़िन्दा रह सकता है! क्या दोनों हिन्दू और मुसलमान गुलाम बनने वाले हैं और दोनों अपने धर्म को भूल जाने वाले हैं? यह कैसे हो सकता है? हमारा आपका तो धर्म हो जाता है कि हम इस सम्बन्ध में सब बातें सरकार को पहुँचा दें।

आज मैं आपको कहूँगा मैं तो मन्त्रियों के साथ बैठता उठता हूँ। पंडित जी तो हमेशा करीब-करीब रोज़ मेरे पास आते हैं, सरदार भी करीब-करीब रोज आते रहते हैं, हालांकि उतना नहीं जितना पंडित जी आते हैं। लेकिन दोनों आते हैं, दोनों मित्र हैं दोनों मेरे साथ रहते हैं। दोनों ने बड़ी खूबी से मेरे साथ लड़ाई भी की है। तो मैं ऐसा नहीं कहना चाहता हूँ कि मैं उनको कुछ कह नहीं सकूंगा। सरकार को हिन्दू, मुसलमान, पारसी और ईसाई सबकी रक्षा करनी है, तभी वे कह सकते हैं कि वे सच्चे कांग्रेसी हैं। हिन्दू सभा है, तो उसका काम तो हिन्दू धर्म की रक्षा करना है। सिक्खों और हिन्दुओं के धर्म की रक्षा करना, बुराइयों और बदियों को हटाना, उनका अपना काम है। दूसरा थोड़े ही कोई मिटाने वाला है। हम दूसरों को कहें कि आप मेहरबानी करके हमारा धर्म बचादें, तो इस तरह धर्म बचता नहीं है। मेहरबानी से कहीं धर्म बचता है? यदि हम कहें कि हमारा धर्म बचाओ तो वह तो धर्म का सौदा हुआ। हमें जान प्यारी है इसीलिये हम ऐसा कहते हैं। हम कभी एक चोला पहिनें, कभी दूसरा तो यह भी कोई धर्म होता है? इस कारण मैं कहूँगा कि ये जो तार देने वाले हैं, उन्होंने कोई बड़ा सयानापन नहीं किया है।

वह चीज़ कह कर मैं आपको दूसरी बात बतलाना चाहता हूँ। हमारे चर्चिल साहब ने दुबारा भी वही चीज़ कही है और बढ़ाकर, बनाकर कही है। यह मुझको चुभता है, क्योंकि मैं तो अंग्रेज लोगों का दोस्त हूँ। मुझको किसी के साथ दुश्मनी

तो है ही नहीं। उनमें बहुत भले लोग पड़े हैं और अभी उन्होंने भारत को आज़ादी देकर बहादुरी का काम किया है। पीछे उसका कुछ भी असर हो, मुझे उसकी परवाह नहीं। चर्चिल साहब उसपर हमला करते हैं और कहते हैं कि जैसा उन्होंने पहले भाषण में भी कहा था, "मैं तो हमेशा से मानता आया हूँ। हिन्दोस्तानी ऐसे हैं, वैसे हैं"। अगर हमेशा मानते आये हैं तो अब पीछे उसको दोबारा दुहराने की क्या जरूरत थी?

लेकिन ऐसा लगता है कि उन्होंने केवल अपनी पार्टी के लिये ही मजदूर सरकार पर हमला किया है ताकि लेबर पार्टी की मिनिस्ट्री मिट जाय और फिर उनकी पार्टी की हुकूमत हो जाय। इंगलैंड में आज मजदूरों का राज्य है। वह एक छोटा सा टापू है, लेकिन मजदूरों की शक्ति पर वह इतना बड़ा है और अपने उद्योग के कारण, दुनिया में मशहूर हो गया है। जो मजदूर सरकार अब वहाँ बनी है, उसको हटा दो। यह चर्चिल साहब की मंशा है। और उसको हटा देने के लिये वे कहते हैं कि इस लेबर मिनिस्ट्री ने बेवकूफी की है, उसने यह भद्दा काम किया, एम्पायर को मलियामेट कर दिया, हिन्दुस्तान जो एम्पायर में था, उसको गंवा दिया और अब बर्मा का भी वही हाल होने वाला है जो हिन्द का हुआ। अब मैं कैसे कहूँ चर्चिल साहब को कि आपका इतिहास बहुत देखा। बर्मा किस तरह से आप लोगों ने लिया। हिन्दुस्तान में कैसे आपने अंग्रेजों की हुकूमत कायम की। उस इतिहास पर कोई आदमी अभिमान कर सके यह मैं नहीं मानता हूँ।

हम आज जो कर रहे हैं, वह वहिशयाना काम करते हैं, और हमारे हाथ में जो हुकूमत आई है, उसको मिटाने की चेष्टा कर रहे हैं, मैं कबूल करता हूँ कि आज आपके नजदीक मैं एक नाकिस आदमी बन गया हूँ। मेरी आपके पास आज नहीं चलती लेकिन मैं आपको कहूँ कि अगर चर्चिल साहब की बात अंग्रेजों ने मान ली, जिसको कि कंज़रवेटिव पक्ष कहते हैं उसने मजदूरों को हराया और मजदूरों के राज्य को शिकस्त दे दी तो वह बुरा होगा। मैं आपको कहूँगा, कि हम किसी शक्ति के मार्फत आजाद हुए हैं, ऐसा सारी दुनिया कहती है। वह शक्ति कैसी है? उस वक्त सत्ता मजदूर वर्ग के हाथ में थी, सोशलिस्ट हुकूमत उस वक्त इंगलैंड में थी और उसने हमें आजादी दी। सोशलिज्म को कौन मिटा सकता है?

उसको न तो चर्चिल साहब मिटा सकते हैं और न कोई और ही मिटा सकते हैं। उनका राज्य दूसरी तरह से चल ही नहीं सकता। यह तो मैं देख चुका। लेकिन माना कि अंग्रेजी प्रजा ने अपनापन गंवादिया और मजदूरों की शिकस्त हो

गई और चर्चिल साहब के हाथ फिर सत्ता आ गयी तो क्या वे हमें अल्टीमेटम दे देंगे कि नहीं हम तुमको फिर से गुलाम बनाने वाले हैं, हमला करने वाले हैं। दें तो सही, किस तरह से वे दे सकते हैं। मेरी अक्ल काम नहीं करती। कैसे भी हम हिन्दुस्तानी बुरे हों, भले हों, हम बदमाश बन जाते हैं, हम दीवाने बन जाते हैं। तो भी उन्हीं लोगों ने मुझको सिखाया है कि आज़ादी सबसे बड़ी चीज़ है। ऐसी बड़ी आज़ादी में जितनी गलतियाँ हों वह सब करने का तुमको हक है। आज़ादी का मतलब यह नहीं है कि हम भले बनें, तब तो आज़ादी मिलेगी और अगर लुटेरे रहते हैं, बुरे रहते हैं तो आज़ादी न मिले। यह कहाँ की बात है? अंग्रेजों के लिये तो वह कानून नहीं हुआ। कोई भी प्रजा जितनी दुनिया में पड़ी है, इनके लिये यह कानून नहीं था और अगर ऐसा रहता कि जो भला रहता है, उसके पास ही आज़ादी रह सकती है, तो आज सारी दुनियां में जो हो रहा है, उसे देखकर कहीं भी आज़ादी कैसे रह सकती है? अंग्रेजों ने ही हमें सिखाया है कि आज़ादी गुलामी की अपेक्षा भली है। एक अंग्रेज लेखक कहता है कि हम चाहे शराब पीये पड़े रहें पर आज़ाद रहें, परन्तु गुलाम हो कर सुधरना स्वीकार नहीं। पर हम उनकी बुराइयाँ ले लेते हैं, भलाइयाँ नहीं।

हिन्दुस्तान में तो सात लाख देहात पड़े हैं, सात लाख देहात के लोग तो आज पागल नहीं हो गये। सात लाख देहात के लोग अगर पागल बन जाते हैं, तो हिन्दुस्तान का नक्शा बदल जायगा। लेकिन सात लाख देहात हिन्दुस्तान के हैं, वे सबके सब पागल बन जाँय, लेकिन आजाद बने रहें, तो मुझको बड़ा मीठा लगेगा। लेकिन चूंकि वे पागल बन गये हैं, इसलिये कोई हिन्दुस्तान पर बद-नज़र करे और कब्जा लेने की कोशिश करे, तो वह चलने वाली चीज़ नहीं है।

मैंने कह दिया है और आज फिर कहता हूँ कि अगर हम पागल रहें, उसका नतीज़ा यह आने वाला है कि अंग्रेज़ तो अब यहाँ आने वाले हैं नहीं, वे अब यहाँ नहीं आ सकते हैं, उन्होंने एक चीज़ निगल दी तो पीछे दुबारा थोड़े ही वापिस लेने वाले हैं, मगर दुनिया के सामने तो सब है, वह तो देखेगी कि क्या हो रहा है? दुनिया उसको यह नहीं करने देगी और न हिन्दुस्तान ही करने देगा। लेकिन दूसरी जो ताक़तें हैं, जिसको यू० एन० ओ० कहते हैं जिसके पास बड़ी ताकत पड़ी है यदि वह यहाँ जाँच पड़ताल के लिये आये तो हम उसे रोक नहीं सकेंगे। पीछे हम ऐसे पागल बन जाते हैं कि अपनापन छोड़ देते हैं तो हम आज़ादी को खोकर उनको दे देंगे।

मैं चाहे बिलकुल अकेला रह जाऊं, लेकिन मेरी ज़बान तो यही सुनायेगी

कि ख़बरदार सारी दुनिया भी आवे, वह हमारा बिलकुल नाश करना चाहती है, तो कर सकती है, लेकिन हमको दुबारा गुलाम बनाकर नहीं रख सकती। मेरी तो ऐसी प्रतिज्ञा है कि हम दुबारा गुलाम न बनें। उस प्रतिज्ञा का आप पालन करेंगे, उसको सच्चा बनाना वह तो आप लोगों का काम है, मेरे अकेले का नहीं है। मैं अकेला तो भारत को बचा नहीं सकता। मेरा क्या ठिकाना है? कौन जाने कब तक चलता हूँ। ईश्वर मुझे उठा लेता है तो हिन्दुस्तान का क्या होने वाला है? मैं अकेला थोड़े ही हिन्दुस्तान को बचा सकता हूँ। वह तो ईश्वर पर निर्भर है और अगर वह साथ रहेगा और उसकी मेहरबानी रही तो हिन्दुस्तान बच सकेगा। जब तक मैं ज़िन्दा हूँ मैं समझता हूँ कि कोई ऐसा नहीं कर सकता कि चलो हिन्दुस्तान में कुछ तूफान हो रहा है, इसलिये उसको गुलाम बनाओ और कब्ज़ा करो। ईश्वर मेरी इस प्रतिज्ञा का पालन आपकी मार्फ़त कराये! यही मेरी इच्छा है।

★

६ अक्टूबर, १६४७

जिन लोगों को हमारी खुराक की समस्या पर जानकारी होनी चाहिये, वे डा० राजेन्द्र प्रसाद के निमन्त्रण पर, उनको खुराक के बारे में, सलाह देने के लिये यहाँ जमा हुए हैं। इस ज़रूरी मामले में यदि कोई भूल हो जाये तो उसका परिणाम यह हो सकता है कि उस भूल से, . जिससे बचा जा सकता है लाखों आदमी मर जायँ। हिन्दुस्तान के भूखे रहने से करोड़ों नहीं तो लाखों की संख्या में, कुदरती तथा इंसान के बनाये हुए दुष्काल से मरने से कुछ अपरिचित नहीं हैं। मैं कहता हूँ कि किसी अच्छी संगठित समाज में हमेशा पहले से ही पानी की कमी से और अनाज की फ़सल बिगड़ने से होने वाली आपत्ति से बचने का पहले से कामयाब इलाज सोच रखा जाता है। इस बात की चर्चा करने का यह मौका नहीं है। इस वक्त तो हमें यही देखना है कि आया हम मौजूदा खुराक की भयंकर परिस्थिति से बचने की उम्मीद रख सकते हैं या नहीं।

मेरा ख्याल है कि हम ऐसी उम्मीद रख सकते हैं। पहला पाठ जो हमें सीखना चाहिये वह है खुद की मदद और स्वाश्रय। अगर हम इस पाठ को हज़म कर लें तो तुरंत ही अपने को विदेशी मुल्कों की मदद पर भरोसा रखने से और आखिर में दिवालियापन से बचा लेंगे। यह बात कुछ अभिमान के तौर पर नहीं कही जा रही बल्कि यह तो एक हक़ीकत है। हमारा कोई छोटा मुल्क नहीं है जो अपनी खुराक के लिए बाहर की मदद पर निर्भर रहे। हमारी जनसंख्या तो चालीस करोड़ है-जो एक बर्रे-आज़म के हिस्से में रहते हैं। हमारे देश में काफी दरिया हैं और भांति-भांति की फ़सलें होती हैं और असंख्य मवेशी हैं। यह तो हमारा ही क़ुसूर है कि यह मवेशी हमारी ज़रूरत से भी कम दूध देते हैं मगर उनमें इतनी शक्ति आ

सकती है कि वह हमारी ज़रूरत के मुताबिक दूध दे सके। यदि गत चंद सदियों में हमारे देश को भुलाया न गया होता तो वह न सिर्फ़ अपने लिये पूरी ख़ूराक का प्रबन्ध कर सकता बल्कि वह बाहर के देशों को भी कुछ खुराक पहुँचा सकता। जिसकी कमी दुर्भाग्यवश पिछली लड़ाई के कारण तमाम संसार में हो गई है। इसमें भारतवर्ष भी शामिल है। मुसीबत घटने के बजाय बढ़ती ही जा रही है। मेरी तजवीज़ का यह अर्थ नहीं है कि यदि कोई देश हमें खुशी के साथ खुराक देना चाहें तो हम उसे नामंजूर कर दें। मेरे कहने का आशय तो केवल यही है कि हम भीख मांगते न फिरें। इससे हम में गिरावट आती है। इसके अलावा यह ख्याल करो कि खुराक को एक जगह पहुँचाने में कितनी कठिनाइयां आती हैं। हमें यह भी डर रहना चाहिये कि विदेश से जो अनाज आवेगा वह शायद अच्छा नहीं होगा। हम इस बात को नज़र-अंदाज़ नहीं कर सकते कि मनुष्य स्वभाव हर मुल्क में कुदरती तौर पर कमज़ोर है। वह कहीं भी न पूर्ण हुआ है न पूर्णता के नज़दीक पहुँचा है। अब हमें यह देखना है कि हमें विदेशी सहायता क्या मिल सकती है। मुझे बताया गया है कि ज़रूरत का केवल तीन फ़ीसदी बाहर से आ सकता है। यदि यह बात सच है और मैंने कई निपुण जानकारों से इस संख्या की सचाई मालूम कर ली है तो विदेशों पर भरोसा रखने में कोई मानी नहीं रहते हैं क्योंकि विदेशों पर थोड़ा सा भी भरोसा रखें तो इसका परिणाम यह आ सकता है कि हमें अपनी हर एक इंच जोती जाने वाली जमीन पर जितना ध्यान देने को है वह नहीं देंगे। अगर हम स्वाश्रयी बनने का निर्णय करें या धन पैदा करने वाली फ़सल की बजाय ख़ूराक की फ़सल पर ध्यान दें तो जो ज़मीन बेकार पड़ी है उसे हमें तुरन्त काम में लाना चाहिये।

खुराक के केन्द्रीयकरण को मैं नुकसानदेह मानता हूँ। विकेन्द्रीकरण से काले बाज़ार पर बड़ी आसानी से आघात पहुँचता है तथा खुराक को इधर उधर ले जाने में जो समय और पैसा ख़र्च होता है वह बचता है। इसके अलावा किसान तो हिन्दुस्तान का अनाज और दालें पैदा करता है वह जानता है कि अपनी फ़सल को चूहों वगैरह से कैसे बचाय। अनाज जब एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन पर जाता है तो चूहों को नुकसान करने का मौका मिलता है। देश को करोड़ों का नुक़सान उठाना पड़ता है और लाखों टन अनाज की कमी पड़ जाती है जिसकी हर एक छटाक हमारे लिये क़ीमती है। अगर हर एक हिन्दुस्तानी ख़ूराक पैदा करने की, जहाँ-जहाँ वह पैदा किया जा सकता है, ज़रूरत महसूस करने लगे तो बहुत मुम-

किन है कि हम यह भूल जायें कि देश में अनाज की कमी है। मैंने अनाज अधिक पैदा करने के लिये सुन्दर आकर्षक विषय को पूरी तरह बयान नहीं किया लेकिन जितना मैंने बयान किया है उससे बुद्धिमान् इस बात की ओर ध्यान देंगे कि हर एक आदमी इस शुभ काम में किस प्रकार मदद दे सकता है।

अब मैं यह बताना चाहता हूँ कि जो तीन फ़ीसदी अनाज हम बाहर से शायद हासिल कर सकते हैं यह घाटा कैसे सहें। हिन्दू हर एकादशी को या पंद्रह रोज़ बाद उपवास या अर्ध-उपवास करते हैं, मुसलमान और दूसरे लोगों को इस बात की मनाही नहीं है कि कभी-कभी भोजन का त्याग कर दें खासकर जब कि लाखों भूखों के लिये उसकी ज़रूरत है। अगर तमाम मुल्क इस बात की खूबी को महसूस कर ले तो हिन्दुस्तान विदेशी अनाज की कमी को ज़रूरत से ज़्यादा मिटा देगा। मेरा अपना ख़्याल है कि राशनिंग का अगर कुछ लाभ है भी तो वह बहुत कम है। यदि काश्तकारों को उनकी मर्ज़ी पर छोड़ दिया जाय तो वे अपनी पैदावार को बाज़ार में ले आएंगे और हर एक को अच्छा खाने लायक अनाज मिलने लगेगा जो आजकल आसानी से नहीं मिलता। मैं खुराक की कमी के इस मुख़्तसिर बयान को ख़त्म करता हुआ प्रेसीडेंट टू मैन की सूचना की ओर ध्यान दिलाता हूँ जो उन्होंने अमेरिकन लोगों को दी है कि उन्हें रोटी कम खानी चाहिये ताकि योरुप वालों के लिये अनाज बचा सकें जिसकी उन्हें सख़्त ज़रूरत है। प्रेसीडेंट ने यह भी कहा कि इस त्याग से अमेरिकन लोगों की सेहत खराब नहीं हो जायगी। मैं प्रेसी-डेंट टू मैन को उनके परमार्थिक बयान के लिये बधाई देता हूँ। मैं नहीं मान सकता कि इस दान के विचार के पीछे अमेरिका को पैसा बनाने का ख्याल रहा होगा। मनुष्य को उसके कार्य से जांचना चाहिये न कि उस भावना से जिससे वह प्रेरित हुआ है। केवल परमात्मा ही मनुष्य के हृदय को जानता है। यदि अमेरिका भूखे यूरोप के लिये खुराक का त्याग कर सकता है तो क्या हम अपने ही लिये यह छोटा-सा त्याग-नहीं कर सकते। अगर बहुत को भूखे मरना ही है तो कम से कम हम इतना श्रेय तो लें कि हमने अपनी मदद करने के लिये जो बन सकता था वह किया। यह मेहनत हमारे देश को ऊँचा उठाती है।

हमें उम्मीद करनी चाहिये कि डा० राजेन्द्र प्रसाद ने जो कमेटी बुलाई है वह जब तक कोई अमली हल इस खुराक की स्थिति को सुधारने का न निकाल लेगी, काम न छोड़ेगी।

*

७ अक्तूबर, १९४७

कल जो मैंने कहा उस में तो एक शब्द भी आज जो हिन्दू मुसलमान के बीच में चल रहा है, उस बारे में नहीं था। लेकिन आज ऐसा कुछ हो गया है कि मुझको बिल्कुल ख़ामोश रहना नहीं चाहिये। यहां नहीं हुआ है, वह हुआ तो है देहरादून में। खासा सज्जन मुसलमान था; उसको कत्ल कर दिया। जहाँ तक मुझको पता है, उस ने कुछ गुनाह नहीं किया था, और कोई कानून हाथ में लिया हो, ऐसा भी नहीं है, लेकिन चूँकि वह मुसलमान था इसलिए उसको काट डाला। मुझ को बुरा लगा कि ऐसा ही हम करते रहे तो आखिर में हम कहां जाकर ठहरेंगे। आज तो मैं देखता हूँ कि मेरे पास काफी मुसलमान भाई--बन्द पड़े हैं। मेरा दिल झिझकता है। अगर मैं उनको कहूँ कि आज यहाँ से जाओ, उस जगह पर चला जा—वह कैसे जाए। आज मैं पाता हूँ कि ट्रेन में मुसलमान सही-सलामत हैं ऐसा भी नहीं। जिसको जो चाहे कम्पार्टमेंट से उठा कर फेंक देते हैं या दूसरी तरह कत्ल कर डालते हैं। मैं यह समझता हूँ कि पाकिस्तान में ऐसी ही चीज़ हो रही है। लेकिन ऐसा हम करते रहें तो उससे हम को क्या फायदा पहुँचने वाला है। आखिर में हम अपने आपको पहचानें तो सही। अपने धर्म को भी तो पहिचानें। सब का धर्म सब के पास रहता है। हमारा धर्म क्या सिखाता है? क्या हम धर्म को छोड़ कर काम कर रहे हैं? क्या कांग्रेस पागल थी? आखिर ६० बरस तक कांग्रेस क्या करती आई? अगर कांग्रेस ने आज तक गलती की तो वह मुल्क की दुश्मन थी, और मैं कहूँगा कि पीछे कांग्रेस को हटा देना चाहिये। आज जो अपने को कांग्रेसी मानते हैं वे भी साफ-साफ़ कह दें कि हम कांग्रेस को छोड़ देते हैं। दूसरी कोई पार्टी बना लेते हैं। उसमें कोई शिकायत नहीं हो सकती है। लेकिन

कुछ भी करो, सारी दुनियां के सामने और हमारे लोगों के सामने मैं इतना तो कह सकता हूँ कि हम अपने हाथों में कानून न लें। ले लेंगे तो हम अपने को मार डालने की कोशिश करेंगे और आज़ादी गंवा बैठेंगे। तो पीछे जब दूसरा कोई आकर हिन्दुस्तान पर कब्ज़ा कर लेगा तो पीछे हम हाथ मलना शुरू कर देंगे कि हमने क्या गज़ब कर दिया। वह कोई अच्छी बात नहीं है। ऐसी बातों में एक पाठ हमें सिखाया जाता है। एक नेवला था उसने बच्चे को बचाने के लिए एक साँप मार डाला। उसका मुंह खून से लाल हो गया। माँ तो आती है बेचारी बाहर से। सर पर पानी का बर्तन है। कुएं पर गई थी, पानी लेने। मिट्टी का बर्तन था। वह नेवला तो नाचता-नाचता आया कि मैंने तुम्हारे बच्चे को बचा लिया, पर वह समझी कि उसने बच्चे को मार डाला है वह बर्तन उस पर डाल दिया। बर्तन का पानी गया, बर्तन टूटा, नेवला मर गया। भीतर जाकर देखती है बच्चा तो पालने में पड़ा था और खेल रहा था, वह भी खुशी से अपनी माँ को मिलना चाहता था। और सामने साँप मरा पड़ा है, तो वह समझ गई कि नेवला उसका दोस्त था, अफ़सोस हुआ, कहा मैंने ख़ामख़ाह उसे मार डाला। तो ऐसा हम न करें कि आखिर में हम, जैसे उस माँ को पछताना पड़ा, वैसे पछताएँ कि अरे हमने अपनी हुकूमत का कहना न माना। हुकूमत हमने बनाई है, क्या हम उसे बिगाड़ेंगे?

हमारे हाथों में आज हुकूमत आ गई है, अपने प्रधान आ गये हैं। आज मुख्य प्रधान यहां जवाहरलाल हैं। वह तो सच्चा जवाहर है, और उसने काफ़ी लोगों की सेवा की है। सरदार हैं, दूसरे हैं। क्या वे हमको नापसन्द हैं? आज कहें जवाहरलाल तो निकम्मा है, वह ऐसा हिन्दू कहाँ है? और हमको तो जैसा हम कहते हैं ऐसा ही करने वाला चाहिए कि जो मुसलमानों को छोड़ दे, उनको निकाल दे। तो ऐसा जवाहरलाल नहीं है, न मैं ही हूँ यह मैं क़बूल करता हूँ। मैं अपने को सनातनी हिन्दू मानता हूँ, तो भी ऐसा सनातनी नहीं कि सिवा हिन्दू के और किसी को हिन्दुस्तान में रहने नहीं दूँ। कोई किसी धर्म का हो, लेकिन हिन्दुस्तान का वफ़ादार है तो वह हिन्दुस्तानी है और उसको यहाँ रहने का उतना ही हक़ है जितना मुझको है। भले ही उसके जाति वालों की तादाद बहुत छोटी हो। धर्म मुझको यही सिखाता है। बचपन से मुझको सिखाया गया कि इसको रामराज्य कहो या ईश्वरीय राज्य कहो। कभी हो नहीं सकता है कि एक आदमी इस वक्त विधर्मी है इसलिये वह नालायक़ है, नापाक है। तो आप समझें कि गांधी भी तो कैसा हिन्दू है। गांधी के हाथ में ताक़त नहीं है, वह प्रधान नहीं है। जवाहरलाल

है तो उसे चाहो तो हटा सकते हो। सरदार है, कौन सरदार ? वह बारदोली का सरदार है। उसकी मानते हो ? तो उसके भी मुसलमान दोस्त पड़े हैं। इनके दोस्त इमाम साहब जो गुजरात में हमारी कांग्रेस के सदर थे मर गए। अब इमाम साहब के दामाद अहमदाबाद में हैं। मेरा ख्याल है वे डिस्ट्रिक्ट कांग्रेस के प्रधान हैं। खासा आदमी है, बड़ा भला है। मैं तो उसे बहुत जानता हूँ। उसने इमाम साहब की लड़की से शादी की। वे इमाम साहब जो दक्षिण अफ्रीका से मेरे साथ आये थे अपना कारबार छोड़ कर अपनी बीवी को साथ लेकर आये और मेरे साथ रहे। वे मर भी गये, उनकी जवान लड़की बैठी है क्या मैं उसे छोड़ दूँ और कहूँ कि अब तू हमारे काम की नहीं है क्यों कि आखिर में तू मुसलमान है। मुसलमान है इसमें कोई शक नहीं। लेकिन वह भली है, अच्छी है, ऐसा मैं कह सकता हूँ। उसको पता नहीं है कि उसको जाना पड़ेगा। अगर सरदार उसे जाने दे तो पीछे वह कहाँ रहने वाली है। हम अपने हाथों में कानून न लें। और जो कानून होने वाला है वह सर्दार या जवाहरलाल करें। आर्डिनेन्स बनावें और पीछे वह प्रजा पर छोड़ दें, ऐसा प्रधान आज हो नहीं सकता। माना कि अंग्रेज़ों के समय वह सब पहले चला था, उन्होंने जो किया सो हम भी करें क्या ? हमें जिसकी शिकायत आज तक करते रहे हैं वही शिकायत हमारे लिये की जाय ? ऐसा हम बर्दाश्त न करें। यही मैं तो कहना चाहता था।

*

मुद्रक : यूनाइटेड प्रेस, दिल्ली